जो प्रकृति से परिचित नहीं होता, उसे प्यार के बारे में कभी पता नहीं चलता...

...कार्ल विल्हेम श्लेगल

हिंसा की राजनीति

पश्चिम बंगाल में सत्ता की मशीनरी का कैसा दुरुपयोग होता है, यह इससे पता चलता है कि बीरभूम में पंचायत चुनाव के नामांकन के दौरान हिंसक टकराव होने पर पुलिस ने 10,000 अज्ञात लोगों को एफआईआर में नामजद किया है!

सर्वोच्च न्यायालय ने पश्चिम बंगाल में प्रस्तावित पंचायत चुनावों में दखल देने से इन्कार किया है और कहा है कि राज्य के विपक्षी दल अपनी शिकायतों को लेकर राज्य निर्वाचन आयोग के पास जा सकते हैं। जाहिर है, शीर्ष अदालत की यह व्यवस्था राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के लिए कोई प्रमाण पत्र नहीं है, जिस पर बलपूर्वक बड़े पैमाने पर विपक्षी दलों के उम्मीदवारों को नामांकन पत्र दाखिल करने से रोकने के आरोप हैं; बल्कि इससे सांविधानिक संस्थाओं की स्वायत्तता रेखांकित होती है। पश्चिम बंगाल में मई के पहले हफ्ते में पंचायत की 42 हजार सीटों के लिए त्रिस्तरीय चुनाव होने हैं, वाम दल, भाजपा और कांग्रेस पार्टी जैसे तमाम विपक्षी दलों ने तृणमूल कांग्रेस पर उनके उम्मीदवारों को आतंकित करने और धमकाने के आरोप लगाए हैं। इस राज्य में चुनावी और राजनीतिक टकराव और हिंसा का अतीत रहा है, जहां वाम दलों के लंबे शासन के बाद 2011 में ममता बनर्जी की अगुआई वाली तृणमूल कांग्रेस की सरकार बनने के बाद भी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है। यहां सत्ता की मशीनरी विपक्षी दलों और विरोधियों के खिलाफ किस तरह काम करती है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि बीरभूम जिले में नामांकन दाखिल करने को लेकर हुए टकराव और प्रदर्शन के बाद दर्ज एफआईआर में पुलिस ने 10,000 अज्ञात लोगों को नामजद किया है! चूंकि 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले राज्य में ये चुनाव राजनीतिक दलों के लिए अपनी ताकत दिखाने का आखिरी मौका है, लिहाजा कोई भी दल पीछे नहीं रहना चाहता। मई, 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को मिली जीत के बाद राज्य में इस पार्टी ने लगातार अपनी जमीन मजबूत की है और वह तेजी से वाम दलों और कांग्रेस को पीछे छोड़कर तृणमूल की मुख्य प्रतिद्वंद्वी बन गई है। इसके अलावा पूर्वोत्तर के राज्यों में जीत दर्ज करने के बाद पश्चिम बंगाल उसका अगला लक्ष्य है, जहां वह आक्रामक तरीके से तृणमूल को चुनौती दे रही है। लेकिन राज्य में नए उद्योग-धंधों और रोजगार के कम अवसरों को मुद्दा बनाने के बजाय राजनीतिक दल वर्चस्व की लड़ाई में उलझ गए हैं। यह दुखद है कि कभी देश को दिशा देने वाले बंगाल में टकराव की इस राजनीतिक संस्कृति ने बेरोजगारों को राजनीतिक दलों का हथियार बना दिया है।

मजदूरों के संघर्ष ने बोए उम्मीद के बीज

बाहरी आर्थिक स्त्रोतों पर निर्भर रहने वाले कमजोर होते जन आंदोलन मजदूर किसान शक्ति संगठन के मॉडल से सीख सकते हैं कि किस तरह इसने बहुत ही कम संसाधनों से अपने को खड़ा किया है।

बाबा मायाराम

पिछले कुछ समय से भ्रष्टाचार के छोटे-बड़े कई घोटाले सामने आए हैं। यह एक बड़ी बीमारी की तरह फैल गया है। वैसे तो हर तरह का भ्रष्टाचार समाज व देश के लिए नुकसानदेह है, पर गरीबों पर इसका हमला उनसे रोजी-रोटी छीन लेता है। व्यक्तिगत रूप से वे इस भ्रष्टाचार को रोकने में असहाय महसूस करते थे, पर सामूहिक रूप से उसे रोकने में कामयाब हो गए। इसका अच्छा उदाहरण राजस्थान का मजदूर किसान शक्ति संगठन है।

हाल ही में मुझे एक कार्यक्रम के दौरान मजदूर किसान शक्ति संगठन (एम.के.एस.एस.) के बारे में जानने का मौका मिला, जब इसके दो संस्थापक सदस्य निखिल डे, शंकर सिंह और मुकेश से मिला। शंकर सिंह और मुकेश ने संगठन की लंबी कहानी सुनाई। वर्ष 1987-88 की बात है। अरुणा राय, निखिल डे और शंकर सिंह गांव में लोगों के साथ जुड़कर सामाजिक काम करना चाह रहे थे। अरुणा राय, पहले आईएएस अधिकारी थीं, जिन्होंने यह ऊंची नौकरी छोड़ दी थी। निखिल डे, अमेरिका से लौटे एक आदर्शवादी युवा थे। शंकर सिंह व उनकी पत्नी अंशी गांव से निकले दंपति थे। वे अजमेर जिले के लोटियाना गांव के हैं। इन सबने अपने सामाजिक काम की शुरुआत राजस्थान के राजसमंद जिले के एक छोटे से गांव देवडूंगरी से की।

राजसमंद, राजस्थान के मध्य में स्थित है। इसी जिले के देवडूंगरी गांव में उन्होंने कच्चे घर में अपना आवास और संगठन का कार्यालय बनाया। यह तय किया कि यहीं रहेंगे, लोगों के बीच काम करेंगे, उनसे ही सीखेंगे और उनके साथ ही आगे बढ़ेंगे। और खुद भी सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी की सीमा अपने लिए रखेंगे और इतना ही खर्च करेंगे। सबसे पहले गांव वालों ने कुछ संदेह किया और घर में झांक कर देखा कि ये कैसे रहते हैं। कहां से पैसा आता है और कितना आता है। जब उन्हें पता चला कि सभी कार्यकर्ता साधारण व बहुत मामूली जरूरतों के साथ रहते हैं। और वे भी दूसरे गांव वालों की तरह न्यूनतम मजदूरी जितनी राशि से अपना खर्च चलाते हैं, तब उन्हें भरोसा हुआ।

संगठन के पास शुरुआत में न्यूनतम मजदूरी कानून के उल्लंघन की शिकायतें बहुत आईं। ग्रामीण रोजगार कार्य और अकाल राहत कार्य में न्यूनतम मजदूरी से कम मजदूरी मिलती थी। होता यह था कि जो कम काम करे उसे भी मजदूरी उतनी मिलती थी, जितनी काम करने वाले को मिलती थी। सुबह से शाम तक उपस्थिति जरूरी होती थी, चाहे काम पहले ही खत्म हो जाए। मजदूरी भी तय दर से कम मिलती थी और वह भी देर से। यहीं से न्यूनतम मजदूरी का संघर्ष शुरू हुआ। यह मुहिम चलाई गई कि जो ग्रामीण रोजगार के काम हो रहे हैं, जनता के समक्ष पूरी जानकारी रखी जाए। मस्टर रोल दिखाए जाएं। फोटोकॉपी व हिसाब-किताब का पूरा ब्योरा ग्रामीणों के सामने रखा जाए।

शुरुआत में तो जानकारी देने में आना-कानी की गई। फिर यह कहा गया कि फोटोकॉपी देने व हिसाब-किताब को जनता को दिखाने का कोई कानून नहीं है। यहीं से सूचना के अधिकार की शुरुआत हुई। और लंबी लड़ाई के बाद पहले राजस्थान में वर्ष 2000 में और फिर 2005 में देश में सूचना का अधिकार का कानून बना। यह कानून एक बड़ी सफलता थी। मजदूर किसान शक्ति संगठन न केवल सूचना के अधिकार का इस्तेमाल कर भ्रष्टाचार की पोल खोल करता रहा है, बल्कि वह कई स्थानों पर भ्रष्टाचार करने वालों से पैसा वापस भी करवाता रहा है।

लेकिन यह उतना पर्याप्त नहीं थी कि लोग अपनी गुजर-बसर ठीक से कर सकें। महंगाई की बढ़ती मार से लोगों को राहत दिलाने के लिए मजदूर किसान किराना स्टोर खोला गया। मार्जिन कम रखकर अच्छा सामान उपलब्ध कराना ही इसका उद्देश्य है। यह दुकान बहुत

अच्छे से चल रही है और उसे चलाने वाले संगठन के कार्यकर्ता भी न्यूनतम मजदूरी जितना मानदेय लेते हैं। मजदूर किसान शक्ति संगठन के संघर्ष के दौरान कई गीत व कहानियां बनी हैं।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि जब जन संगठन व जन आंदोलन कमजोर हो रहे हैं, संसाधनों की कमी रहती हैं, बाहरी आर्थिक स्रोतों पर निर्भर होते हैं, वे मजदूर किसान शक्ति संगठन के मॉडल से सीख सकते हैं। किस तरह इस संगठन ने बहुत ही कम स्थानीय संसाधनों से अपने आप को खड़ा किया है। यह आदर्श हो सकता है। निजी जिंदगी और सार्वजनिक जीवन एक-सा है। दूसरी बात सीखने लायक यह है कि संगठन ने स्थानीय मुद्दों पर संघर्ष करते हुए उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत करवाने में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की। सूचना का अधिकार और इसी तरह रोजगार गारंटी योजना इसके उदाहरण हैं। यानी स्थानीय मुद्दों पर काम करते हुए उसके महत्व को बड़े परिप्रेक्ष्य में देखना। तीसरी बात जो महत्वपूर्ण है कि लोकतंत्र में जनता की आवाज को न केवल केंद्र में लाना, जो हाशिये पर ढकेली जा रही है, बल्कि उसे सशक्त और जोरदार तरीके से उठाना।

कुछ भी...

केवल आठवीं तक पढ़े थे राहुल सांकृत्यायन

राहुल सांकृत्यायन के जीवन में, विश्व-दृष्टि में, लेखन सरोकारों में मृत्यु-पर्यंत होने वाले लगातार परिवर्तनों, शोधों, ग्रहण और त्याग का जो सिलसिला है, उसे वास्तविक अर्थों में 'सत्य की खोज' की अनवरत और अधूरी यात्रा ही कहा जा सकता है। जीवन में उन्होंने शारीरिक और भौतिक जगत में ही यात्राएं नहीं कीं, बल्कि अंतर्मन और अंतर्जगत, विश्व-दृष्टि और अंतर्दृष्टि, वैचारिक और दार्शनिक सरोकारों में भी एक असीम यात्रा तय की। उनका संपूर्ण जीवन बाह्यजगत और अंतर्जगत के बीच निरंतर चले संवाद, विवाद, समाकलन, स्वीकार और अस्वीकार का असमाप्य सिलसिला है। परंपरागत ब्राह्मण परिवार की रूढ़ियों से मुक्त होने के लिए जीवन के वास्तविक अर्थ को खोजने में वे पहले उदार बन सनातनधर्मी हुए कि शायद ईश्वर प्राप्ति ही उसका एकमात्र लक्ष्य हो। वहां से विफलता की आत्महंता निराशा से आर्यसमाज में कुछ रोशनी दिखाई दी, तो उसको ग्रहण कर उसका संपूर्ण ज्ञान अर्जित किया। उससे भी जीवन की वास्तविक समस्याओं का हल नहीं मिला, तो बौद्ध धर्म की मान्यताओं को स्वीकार किया। वहां भी संतुष्टि नहीं मिली, तो तर्काधारित विचारधारा मार्क्सवाद को अपनाया। लेकिन जब उसमें भी अनेकानेक अंतर्विरोध, न्यूनताएं और अंधविश्वास दिखाई दिए, तो उससे आगे जाने का प्रयास किया।

-बीबीसी से

आत्म शांति

तपस्वी उदयनाचार्य

कई त्यागी-तपस्वी ऐसे रहे हैं, जो घोर दरिद्रता में रहे, परंतु कभी किसी के सामने उन्होंने हाथ नहीं पसारा। मिथिला में एक नैयायिक थे, किरणावली- ईश्वर-सिद्धि के रचयिता उदयनाचार्य। उन्होंने अपने समय में बड़े-से-बड़े मठाधीशों व धनपतियों से टक्कर ली, सदा सच का सहारा लिया, कभी किसी से हंसी-मजाक नहीं की, सुविधा के लाभ के लिए किसी की खुशामद या याचना नहीं की। बौद्ध दर्शनों के आचार्यों के सम्मुख हिंदू धर्म का- ईश्वर-सिद्धि का विवेचन कर वह विजय पाते रहे। इतने पर भी इतने त्यागी, तेजस्वी पंडित के घर में अभाव ही आभाव थे। एक बार उनकी पंडिताइन के पास बदलने को वस्त्र भी नहीं रह गए। उसने फटे-पुराने वस्त्र पहन लिए। उसने उनके कपड़ों की चर्चा की। यह चर्चा सुनकर पंडिताइन रो उठी। पत्नी को रोते देखकर संयमी तपस्वी उदयनाचार्य भी विचलित हो उठे। उनकी पत्नी अभावों, कष्टों में भी कभी नहीं रोई थी। सारी बात सुनकर उदयनाचार्य भी विचलित हो गए, बोले- अब तो तुम्हारी लाज की रक्षा के लिए राजा के पास जाना ही होगा। पति-पत्नी दोनों चले। रास्ते में नदी पड़ी। मल्लाह ने नदी की उतराई मांगी। उदयनाचार्य सरल भाव से बोले- हम ब्राह्मण पंडित हैं। मल्लाह बिगड़कर बोला- सभी अपने को पंडित कहते हैं। पंडित तो मिथिला-भर में अकेला उदयन है, जो घोर अभाव में रहा, पर कभी किसी के सामने हाथ नहीं पसारा। पत्नी ने बात सुनते ही पति को इशारा किया कि उसकी सिंदूर की डिबिया घर में रह गई, नाव से उतर जाइए। दोनों पति-पत्नी घर लौट आए। पत्नी बोली- हम दुःख कष्ट सह लेंगे, पर मैं ऐसे यश को कलंकित कभी नहीं करूंगी।

गर्मियों में नारियल पानी पीने से शरीर को काफी मात्रा में मिनरल्स मिल जाते हैं और शरीर में पानी की कमी भी नहीं होती है।

गर्मी में भले ही गले को तर करने के लिए लोग कोल्डड्रिंक पीते हों। मगर गर्मी से राहत देने में देसी और नेचुरल पेय का कोई सानी नहीं हो सकता, जैसे कि नारियल पानी।

नारियाल पानी पीने से शरीर को काफी मात्रा में मिनरल्स मिल जाते हैं और शरीर में पानी की कमी भी नहीं रहती। यानी प्यास बुझाने के साथ-साथ यह शरीर को स्वस्थ भी रखता है। यह हल्का, प्यास बुझाने वाला, अग्निप्रदीपक, त्वचा के रंगत प्रदान करने के लिए बहुत उपयोगी होता है। नारियल पानी में पोटैशियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो किडनी की सेहत के लिए जरूरी तत्व है। अगर पेट में इन्फेक्शन की वजह से कोई समस्या है, तो आपके लिए नारियल पानी का सेवन करना बेहतर रहेगा। नारियल तेल की मालिस से मस्तिष्क ठंडा रहता है। साथ ही गर्मी में लगने वाले दस्तों में यदि एक कप नारियल पानी में पिसा हुआ जीरा मिलाकर पिलाया जाए, तो दस्त में तुरंत आराम मिल सकता है।

अलका पाल
क्लिनिकल न्यूट्रिशनिस्ट
उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, सैफई, इटावा

नारियल में एमिनो एसिड, विटामिन्स, पोटैशियम, कैल्शियम, सल्फर, मैग्निशियम और अन्य मिनरल्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, इसलिए इसमें बहुत सारे औषधीय गुण होते हैं, जो बहुत सी बीमारियों के उपचार में लाभदायक होते हैं। नारियल के औषधीय गुण इस प्रकार हैं:

ब्रेन बूस्टर- नियमित रूप से नारियल खाने या नारियल पानी पीने से याददास्त तेज होती है। अल्जाइमर जैसी बीमारी में दिमाग की कोशिकाएं कार्य करना बंद कर देती हैं। नारियल में मौजूद कार्बोहाइड्रेट और विटामिन-बी इन कोशिकाओं को ठीक से कार्य करने में सहायता करते हैं, जिससे अल्जाइमर रोग को रोकने में मदद मिलती है।

वेट मैनेजमेंट- नारियल पानी शरीर के मेटाबॉलिज्म की दर को बढ़ाता है, जो वजन कम करने में बहुत सहायक है। नारियल में भरपूर मात्रा में जिंक पाया जाता है, जो शरीर में एंटी-ओबेसिटी का कार्य करता है।

दिल- नारियल शरीर में मौजूद कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है। इसमें मीडियम चैन ग्लिसराइड होता है, जो हार्ट अटैक के खतरे को कम करता है।

कैंसर- नारियल में सेलेनियम नामक एंजाइम होता है, जो पॉलीअनसैचुरेटेड फैटी एसिड के मेटाबॉलिज्म प्रोसेस में महत्वपूर्ण होता है और शरीर में फ्री रेडिकल्स होने से रोकता है। यह कैंसर को रोकने में सहायता करता है।

डिहाइड्रेशन व स्किन- नारियल या नारियल पानी का नियमित सेवन एंटी-एजिंग की तरह काम करता है। इसमें पाए जाने वाले फैटी एसिड त्वचा को नमी प्रदान करते हैं, जिससे त्वचा में झुर्रिया नहीं पड़ती हैं। डिब्बाबंद नारियल पानी का सेवन न करें, क्योंकि डिब्बाबंद नारियल पानी में कई तत्वों की कमी हो जाती है।

एसिडिटी- एसिडिटी में नारियल पानी का सेवन करना अत्यंत लाभकारी है। यदि बहुत समय से एसिडिटी की समस्या हो, तो नियमित रूप से दिन में 3 या 4 घटें के अंतराल पर नारियल पानी पीने से कुछ ही दिनों में एसिडिटी की समस्या खत्म हो जाती है। साथ ही यह पाचन प्रक्रिया को भी व्यवस्थित करता है।

कालरा- कालरा में शरीर में पानी की मात्रा बहुत कम हो जाती है और निर्जलीकरण हो जाता है। नारियल पानी में पोटैशियम व अन्य मिनरल्स की भरपूर मात्रा पाए हैं, जिस कारण से शरीर में इलेक्ट्रोलिस्टक व्यवस्थित रहता है और शरीर में पानी की कमी नहीं होती है।

यूरिन इन्फेक्शन- किडनी स्टोन व हाई ब्लड प्रेशर में नारियल पानी प्राकृतिक डायोरेटिक का कार्य करता है, जिससे यूरिन इन्फेक्शन नहीं होता है। साथ ही किडनी स्टोन होने पर नारियल पानी पीने से काफी लाभ मिलता है। हाई ब्लड प्रेशर में भी नारियल पानी बहुत लाभप्रद है।

अंतरिक्ष में पहला लग्जरी होटल!

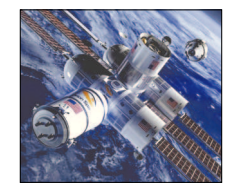

अंतरिक्ष में दुनिया का पहला लग्जरी होटल तैयार किया जाएगा, जिसका नाम होगा, 'औरोरा स्टेशन'। यह होटल अमरिकी स्टार्टअप ओरियन स्पैन द्वारा तैयार किया जाएगा। इसमें 12 दिवसीय यात्रा पर पहुंचे अंतरिक्ष यात्रियों में दो क्रू मेंबर सहित छह लोग आराम से रुक सकेंगे। यह होटल 2022 तक बनकर तैयार हो जाएगा, लेकिन इसमें 12 दिन तक रुकने के लिए अंतरिक्ष पर्यटकों को 9.5 मिलियन डॉलर यानी करीब 61.6 करोड़ रुपये खर्च करने होगें। होटल बनाने वाली स्टार्ट अप से जुड़े लोगों का कहना है कि उनका लक्ष्य अंतरिक्ष में सभी के लिए सुलभ जगह बनाना है। औरोरा होटल की लंबाई 43.5 फीट और चौड़ाई 14.1 फीट होगी।

जब छात्र नाचे...

जब छात्र अपनी पढ़ाई पूरी करके डिग्री हासिल करते हैं, तब वे अपनी खुशी जाहिर करने के लिए टोपी उछालते हैं, गाने गाते हैं और डांस आदि करते हैं। कुछ ऐसा ही फिलीपीन्स के लगुना राज्य के सैन पाब्लो शहर में देखने को मिला। जहां सैन जोस नेशनल हाई स्कूल के बच्चों ने कक्षा का साल पूरा करने की खुशी जाहिर करने के लिए अमेरिकन फिल्म 'हाई स्कूल म्यूजिकल' के गाने 'वी आर ऑल इन दिस टूगेदर' और अन्य फिल्मों के गाने बजाए और खूब थिरके। इस दौरान स्कूल के अध्यापक और कर्मचारी भी मौजूद रहे। सोशल मीडिया पर साझा किए गए इस वीडियो को अब तक 17 लाख बार देखा जा चुका है।

ENGLISH vinglish

Word-Meaning (शब्द-अर्थ)

- **Honorarium**
  उच्चारण- ऑनरैरिअम, **अर्थ-** परिश्रमिक
  समानार्थी शब्द- allowance- अलाउन्स
- **Testimonial**
  उच्चारण- टेस्टिमोनीअल, **अर्थ-** प्रमाण-पत्र
  समानार्थी शब्द- good word- गुड वर्ड
- **Infirmity**
  उच्चारण- इन्फर्मिटी, **अर्थ-** कमजोरी
  समानार्थी शब्द- feebleness- फीबलनेस
- **Frivolous**
  उच्चारण- फ्रिवलस, **अर्थ-** छिछोरा
  समानार्थी शब्द- jokey- जॉकी

साइबर जोन

कायदे से देखें तो सलमान खान को अगर जेल नहीं हुई होती तो लोगों का न्याय पर से विश्वास उठ जाता और अगर जमानत नहीं होती तो पैसे से!
सरिता

छोले भटूरे पर सियासत के मद्देनजर देखा जाए तो 2019 का आम चुनाव किसी और मुद्दे के बजाए छोले भटूरे पर लड़ा जाना चाहिए। ***@ सुनील***

पहले पकौड़ा और अब छोले भटूरे की भारतीय राजनीति में एंट्री हुई है। अब कहीं कोई यह न कह दे कि इडली-डोसा के साथ नाइंसाफी हो रही है! ***@ राजन***

पहले आलू की फैक्ट्री फिर आलू से सोना बनाया गया। इसके बाद नारियल का जूस निकाला गया और अब दो घंटे के उपवास की खोज के बारे में सुनकर नासा वाले भी हैरान हैं! ***@ शशि प्रकाश***

भविष्यफल

मेष नौकरी में कार्य कुशलता बढ़ेगी। अर्थ प्राप्ति संभव है। व्यवसाय से संतुष्ट रहेंगे।

वृषभ आलस्य पर नियंत्रण रखें। योजना सफल होगी। सरकारी क्षेत्र में अटके कार्य बनेंगे।

मिथुन आर्थिक दवाब बना रहेगा। व्यावसायिक क्षेत्र में सोच समझकर निर्णय लें।

कर्क करियर संबंधी चिंता से मुक्ति मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा।

सिंह समाज में सम्मान बढ़ेगा। अटके कार्य में सफलता मिलेगी। व्यवसाय में लाभ बढ़ेगा।

कन्या रचानात्मक क्षेत्र में रुचि रहेगी। नौकरी में विरोधी से बचें। व्यवसाय में लाभ होगा।

तुला दिनमान श्रम साध्य रहेगा। वाद-विवाद से बचें। महत्वपूर्ण कार्य में निराशा होगी।

वृश्चिक पूर्व नियोजित कार्य सफल होंगे। लोकप्रियता में वृद्धि होगी। यात्रा अनुकूल रहेगी।

धनु शुभचिंतकों का सहयोग मिलेगा। कार्य योजना सफल होगी। व्यवसाय में लाभ होगा।

मकर नौकरी में पद-प्रतिष्ठा का लाभ संभव है। आर्थिक क्षेत्र में उन्नति होगी। उत्तम लाभ होगा।

कुंभ स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। कार्यक्षेत्र में परेशानी होगी। व्यय अधिक होगा।

मीन नए कार्य में सफलता मिलेगी। भू-संपत्ति में वृद्धि संभव है। व्यवसाय में लाभ बढ़ेगा।

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2075, 21 चैत्र मास शाके 1940, चैत्र मास 29 प्रविष्टे, 23 रज्जब हिजरी 1439, वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी 06.40 तक उपरांत एकादशी, धनिष्ठा नक्षत्र 25.39 तक उपरांत शतभिषा नक्षत्र, शुभ योग 29.40 तक उपरांत शुक्ल योग, विष्टि (भद्रा)करण 06.40 तक उपरांत बव करण, चंद्रमा कुंभ राशि में 12.32 बजे।

सूर्योदय : 06.03 **सूर्यास्त : 18.40**

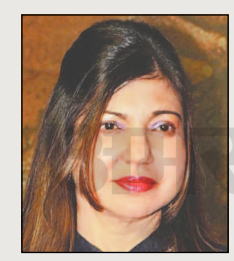

अलका याग्निक - मेष राशि

अर्थ प्राप्ति संभव है

इस राशि के जातकों को नौकरी में कार्य कुशलता बढ़ेगी। अर्थ प्राप्ति संभव है। व्यवसाय से संतुष्ट रहेंगे। पारिवारिक चिंता बनी रहेगी।